राजनीतिक अखाड़े में साम्प्रदायिकता बनाम साप्रदायिकता

-मनोज कुमार झा

क्या नरेन्द्र मोदी भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी होंगे? यह लगभग तय हो चुका है। लेकिन भाजपा में एक गुट इसके खिलाफ है आडवाणी मौन हैं। मौन ही उनके विरोध को मुखर कर रहा है। सुषमा स्वराज भी मैंदान में हैं।

इधर जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष शरद यादव खुलकर मोदी के खिलाफ खड़े हो गए हैं और साफ-साफ कह दिया है कि वे आग से न खेलें। स्पष्ट है, भाजपा मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाती है तो जद (यू) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से अलग हो जायेगा। नीतीश की नीति किसी से छिपी नहीं। मोदी का विरोध कर वह बिहार में अपना मुस्लिम वोट बैंक और मजबूत करेंगे।

मुस्लिम वोट बैंक इस देश में राजनेताओं को शुरू से ही ताकत देता रहा है। मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति करने वाले भी उसी तरह साम्प्रदायिक हैं, जैसे हिंदू वोट बैंक की राजनीति करने वाले और इस तरह देखें तो इस देश में कोई ऐसी पार्टी नहीं, कोई ऐसा नेता नहीं, जो साम्प्रदायिक आधार पर राजनीति न करता हो।

ऐसा शुरू से ही होता चला आ रहा है। अंग्रेज शासकों ने इस विष-वेल को रोपा था और इसकी काट इस देश का मरियल जनतंत्र नहीं कर पाया।

क्या विडंबना है, जो अपने को सेकुलर कहते हैं, वो मुस्लिम अल्पसंख्यकवाद की सवारी गांठते हैं लालू, नीतीश, पासवान, मुलायम और भी न जाने कितने रहनुमा।

कांग्रेस तो एक साथ ही हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक राजनीति करने की कोशिश करती है और चूंकि उसने किसी एक का पल्लू पकड़ नहीं रखा तो कहती है कि सेकुलर है।

इसके अलावा राजनीति का माफिया कनेक्शन। शायद ही ऐसा कोई बड़ा नेता हो जिसके ऐसे कनेक्शन न हों। पवार से

लेकर साफ-सुथरे कहे जाने वाले नीतीश तक। बहरहाल, भाजपा पर संघ का शिकंजा ज़्यादा ही मजबूत हो गया है। घोटालों में पूरी तरह डूबे गडकरी को जब भाजपा अध्यक्ष पद छोड़ना ही पड़ा तो उन्होंने राजनाथ सिंह को अध्यक्ष बनवा दिया, इस शर्त पर कि वे उनके प्रति निष्ठावान रहेंगे। सुषमा स्वराज अध्यक्ष पद के लिये प्रबल दावेदार थीं। आडवानी के करीब होने के कारण और मोदी के लगातार बढ़ते कद के कारण उनके नाम पर विचार करने की जरूरत नहीं समझी गई।

गुजरात में लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करने के बाद भाजपा में उनका कद स्वाभाविक ही पहले से ज्यादा बड़ा हो गया है। पर मोदी के नाम पर भाजपा अन्य राज्यों से वोट खींच पायेगी, इसमें संदेह है। जब मोदी संघ और भाजपा ही में सर्वस्वीकार्य नहीं हैं तो उत्तर के राज्यों में किस हद तक स्वीकार्य हो सकते हैं, जहां अभी अलग अलग रंग और ढंग के क्षत्रपों का राज है।

यह ठीक है कि देश के बड़े उद्योगपति मोदी के पक्ष में लामबंद हो चुके हैं, पर वोट तो आखिरकार जनता को ही देना है। भूखी-प्यासी, अधनंगी, जाति-धर्म और तरह-तरह से अलग-थलग की गई जनता को। सिर्फ उद्योगपतियों के चाह लेने भर से मोदी इस देश के शासक नहीं हो सकते।

संभव है, गुजरात से बाहर निकलना उनके लिए कहीं भारी न पड़ जाए। मोदी संप्रदायकवाद नहीं, विकास की बात करते हैं। पर नेताओं द्वारा की जाने वाली विकास की बातों पर जनता को यकीन नहीं है। वह किसी मुद्दे पर नहीं, बस यूं ही वोट दे देगी। इससे आजिज तो उसे और उससे आजिज तो इसे। जहां तक सोनिया-मनमोहन सरकार की बात है तो जस्टिस जे एस वर्मा आयोग ने साफ कह दिया कि देश में सुशासन नहीं है। किसी सरकार को उसकी औकात बताने वाली इससे बड़ी टिप्पणी और क्या हो सकती है।

पर सुशासन अथवा महज शासन है कहां। दिल्ली रेप कांड से पूरा देश हिल गया, लेकिन बिहार के उस रेप कांड को क्या कहेंगे, जहां पूर्णिया ज़िले में एक अत्यंत ही दलित महिला के साथ गैंगरेप के बाद उसके विरोध को कुचलने के लिये नंगा करके पेड़ पर फांसी लटका दिया। इर्द-गिर्द कई लोग थे और वहां मौजूद थे वर्दीधारी राइफलें लिए कुछ पुलिस वाले भी। न जाने कहां-दलित जनता को फांसी पर लटकाया जा रहा है या ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी गई है कि कितने लोग रोज ही खुद फांसी से लटक रहे हैं। भूलना नहीं होगा, न जाने कितनी लड़कियां रेप होने के बाद खुद ही जान दे देती हैं।

जनता पूरी तरह त्रस्त है हर मोर्चे पर मात खाती चली जा रही है। महानगरों की जगमगाती रोशनियों के बीच ही इतनी अंधेरी और गहरी खाइयां हैं कि विकास की बातें कर जनता को बरगलाने वाले नेता इसे क्या समझेंगे। कस्बों-गांवो में तो अंधकार का ही साम्राज्य है। यह अंधेरा अभी और बढ़ेगा।

नेता, संत और महंत इस देश की जनता को लूट रहे हैं। कानून-व्यवस्था नहीं, लूट-मार मची है।

ऐसे में मोदी विकास की बात कर इस देश का प्रधानमंत्री बनना चाह रहे हैं, तो मुगालते में हैं। क्षत्रप मिल-जुल कर नए ध्रुवीकरण करेंगे। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन भी ढहने वाला है और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन भी।

2014 के आम चुनाव में क्या होगा, कहना मुश्किल है, पर वोट तो जाति-धर्म, अगडा-पिछठा दलित-महादलित के नाम पर ही लिए जाएंगे। लूटे भी जाते हैं वोट। सिनेमा के पर्दे पर नाचने वालियों को भाड़े पर बुला शहर-शहर नचवा कर, जनता का मनोरंजन करके भी लिए जाते हैं वोट पूड़ी-सब्जी खिलाना, देसी शराब की बोतलें बंटवाना, नोट तक बांटना वोट के लिये आम चलन है। और फिर माफ़िया किस लिये है?

लेकिन राजनीतिक ध्रुवीकरण, प्रभावी गठबंधन मायने रखते हैं। अलग-अलग रंग और ढंग के क्षत्रपों के ज़ोर को देखते हुए संभव नहीं लगता कि मोदी प्रधानमंत्री बन सकेगे।

इसकी वजह यह है कि ज्यादातर क्षत्रप मोदी के विरोधी हैं। गोधराकांड के बाद गुजरात में हुए दंगों को भारतीय इतिहास में भूला नहीं जा सकता। उस क्रूर हत्याओं और नरसंहारों को भूला नहीं जा सकता। ऐसे ही नहीं, भाजपा और संघ में भी मोदी के खिलाफ सुगबुगाहट है, इनका नेतृत्व भाजपा को अन्य क्षेत्रीय दलों और क्षत्रपों के लिए अछूत बना दे सकता है। भाजपा अलग-थलग पड़ सकती है। इसका लाभ कांग्रेस को मिल सकता है। और कांग्रेस अलग-थलग पड़ती है। तो क्षत्रप मिल-जुलकर, वामपंथियों को अपने साथ जोड़ कर मोर्चा जैसा कुछ बना सकते हैं। राष्ट्रीय राजनीति में पूरी तरह अलग-थलग पड़ गए वामपंथी इसी मौके की ताक में हैं।

कुंभ में जुटे संतों-महंतों के एक गुट ने उन्हें माफी मांगने को कहा।

मोदी बेशक माफ़ी मांग लें, चाहे कितनी भी विकास की बातें क्यों न करें, उनकी छवि पक्के मुस्लिम विरोधी की बन गई है। कुछ-कुछ हिटलरनुमा।

बस इसी का लाभ दूसरी पार्टियों को मिलना है।

इस देश में जीत तय करने में मुस्लिम वोट अहम हैं।

मुस्लिम वोट न मिले तो जीत मिलती नहीं।

क्या मुसलमान मोदी के नाम पर वोट देंगे?

हर्गिज नहीं।

भाजपा मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करती है तो निश्चय ही आत्मघात की राह पर आगे बढ़ जाएगी।

विज्ञापनों का फ़र्जीवाड़ा

आज शायद ही कोई ऐसा अख़बार मिले जिनमें फ़र्जी विज्ञापन न छापे जाते हों। हिंदी से लेकर अंग्रेजी आख़बारों में ऐसे-ऐसे विज्ञापन प्रकाशित किये जा रहे हैं, जो सेक्स और अंधविश्वास को बढ़ावा देने के साथ ही नौकरी दिलाने के नाम पर बेरोज़गार युवाओं को ठगने वाले होते हैं। ये विज्ञापन जो दो-चार पंक्तियों के होते हैं, क्लासीफाइड विज्ञापनों के रूप में सस्ती दरों पर छापे जाते हैं। इनमें नौकरी के लिये कंपनियों के विज्ञापन के अलावा तांत्रिकों-बाबाओं, मसाज पार्लर्स, फ्रेंडशिप क्लब, एस्कार्ट सेवाओं अदि के विज्ञापन धड़ल्ले से छपते हैं। सबसे ज्यादा तो सेक्स कमजोरी को दूर करने और जापानी इंद्रीवर्द्धक यंत्र के विज्ञापन होते हैं। कुछ विज्ञापन ऐसे भी होते हैं जिनमें लड़कियों के साथ मित्रता करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष का नाम बाकायदा मोबाइल फ़ोन नंबर के साथ छपा होता है। इसके अलावा कद बढ़ायें, मोटापा दूर करें जैसे विज्ञापन होते हैं। कुछ विज्ञापनों में टीवी और फ़िल्मों में काम देने के लिये विज्ञापन भी छपे होते हैं। फ्रेंडशिप क्लबों के जो विज्ञापन छपते हैं उनमें यह लिखा होता है कि हाईप्रोफाइल लड़कियों, महिलाओं एवं मांडलों से दोस्ती कर मौज-मस्ती के साथ-साथ प्रतिदिन 10 से 20,000 रुपये तक कमायें। अंग्रेजी के अख़बारों में मसाज पार्लर्स और एस्कार्ट सेवाओं के विज्ञापन ज़्यादा ही छपते हैं। मेल टू मेल मसाज सर्विस के विज्ञापन भी देखने को मिले। इस बात को समझना मुश्किल नहीं है कि मसाज पार्लरों और एस्कार्ट सेवाओं की आड़ में उच्च स्तर पर देह-व्यापार चलता है। कई विज्ञापनों में साफ़ लिखा होता है कि फाइव-स्टार और सेवन-स्टार होटलों के ग्राहकों को ही मसाज करने वाली लड़कियां भेजी जायेंगी। मसाज पार्लर और एस्कार्ट सर्विस देने वालों में रूस, यूक्रेन, कजाकिस्तान अदि देशों से देह का धंधा करने के लिये आने वाली लड़कियां भी होती हैं। इस धंधे में नेपाली लड़कियां तो आम तौर पर होती हैं।

इन विज्ञापनों के जाल में कई लोग फंस कर लुट-पिट चुके हैं। फ्रेंडशिप क्लबों के चक्कर में पड़ कर बहुतेरे नवजवान काफ़ी पैसे बर्बाद कर डालते हैं और किसी

अगर किसी ने पैसे दे दिये तो उनके इंटरव्यू आदि का ड्रामा करने के बाद कहा गया कि नियुक्ति पत्र उनके पते पर डाक से भेजा जायेगा। लेकिन महीनों तक नियुक्ति पत्र नहीं आने पर जब अभ्यर्थी दुबारा उस कार्यालय में गया तो पता चला कि वे तो जगह छोड़ कर कबके जा चुके हैं।

लड़की से उनकी मित्रता नहीं हो पाती, पैसे कमाना तो दूर की बात है। कुछ अर्सा पहले दिल्ली पुलिस ने किसी भुक्तभोगी की शिकायत पर एक फ्रेंडशिप क्लब के दफ़्तर पर छापा मारा था। उस ऑफिस में एक व्यक्ति एवं पाच-छः लडकियां पाई गईं, इसके अलावा छः-सात मोबाइल फ़ोन और लगभग एक दर्जन सिम कार्ड मिले पुलिस ने सारे फ़ोन और सिम कार्ड जब्त कर लिये और वहां मौजूद सभी को पूछताछ के लिये थाने में ले गई। लेकिन इसके बाद क्या हुआ, इसका पता नहीं चल पाया। दरअसल, दिल्ली में सैंकड़ों की संख्या में जो फ्रेंडशिप क्लब चल रहे हैं, वे ठगी और वहां काम करने वाली लड़कियों के देह-शोषण के अड्डे हैं। ये फ्रेंडशिप क्लब पुलिस से सांठगांठ कर चलते हैं। मसाज पार्लर चलाने वालों के भी पुलिस से लेन-देन के रिश्ते होते हैं। अगर ऐसा न हो तो मसाज पार्लर चलाने और एस्कार्ट सर्विस देने के नाम पर देह का धंधा एक दिन भी न चल पाये।

अब बात आती है तांत्रिकों और काले इल्म के जानकारों की जो यह दावा करतें हैं कि सभी तरह के समस्याओं का चुटकी में समाधान कर देंगे।

ये यह भी दावा करते हैं कि वशीकरण के माध्यम से प्रेमी-प्रेमिकाओं को मिलवायेंगे, पति अगर किसी दूसरी के चक्कर में पड़ा है तो ऐसा जादू कर देंगे कि वह बीवी को छोड़ कर दूसरे को देखेगा नहीं, पुरानी से पुरानी प्रेतबाधा को दूर करेंगे और सारी समस्याओं का समाधान पांच मिनट में ही कर देंगे। अगर पांच मिनट में समस्यायें दूर नहीं हुई तो पैसा वापसी की गारंटी। ऐसे तांत्रिकों और बाबाओं के चक्कर में अनपढ़ तो अनपढ़, पढ़ी-लिखी और आधुनिक महिलाएं भी फंस जाती हैं। ये तांत्रिक और बाबा उनसे पैसे तो ठगते हैं, मौका मिलने पर उनका यौन शोषण करने से भी बाज़ नहीं आते। इस तरह के कई मामले अख़बारों में सामने आ चुके हैं।

इन अख़बारों में रोज़गार संबंधी जो विज्ञापन होते हैं। वे भी फर्जी होते हैं। ऐसे कई मामले सामने आये जब सुरक्षा गार्ड और अन्य कर्मचारियों की बहाली के विज्ञापन पढ़ कर बेरोज़गार नौजवान दिल्ली अथवा अन्य स्थानों पर स्थित उनके कार्यालयों में गये तो बहाली के पूर्व रजिस्ट्रेशन आदि के नाम पर उनसे पैसों की मांग की गई। अगर किसी ने पैसे दे दिये तो उनके इंटरव्यू आदि का ड्रामा करने के बाद कहा गया कि नियुक्ति पत्र उनके पते पर डाक से भेजा जायेगा। लेकिन महीनों तक नियुक्ति पत्र नहीं आने पर जब अभ्यर्थी दुबारा उस कार्यालय में गया तो पता चला कि वे तो जगह छोड़ कर कबके जा चुके हैं।

शेष पेज 2 पर